

परिशिष्ट : दोन  
डॉ. शंकर शेष के नाटक

नाम	लेखन काल	प्रकाशक	प्रकाशन काल
१. मूर्तिकार	१९५५	आर्य बुक डेपो, नई दिल्ली	१९७२
२. नई सम्भता के नये नमुने	१९५६	पांडुलिपि	-
३. रस्तागर्भ	१९५६	जगतराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१९८४
४. बेटोवाला बाप	१९५८	अनुपलब्ध	
५. तिल का ताढ़	१९५८	पांडुलिपि	
६. बिन बाती के दीप	१९६८	पराग प्रकाशन, दिल्ली	१९८५
७. बाट का पानी (चंदन के दीप)	१९६८	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	१९८४
८. बंधन अपने अपने	१९६९	अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद	१९७३
९. खजुराहो का शिल्पी	१९७०	अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद	१९७२
१०. फंटी	१९७१	अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद	१९७८
११. इक और दोषाचार्य	१९७१	पराग प्रकाशन, दिल्ली	१९८३
१२. कालजयी (मराठी-हिंदी)	१९७३	सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली	१९८०
१३. घरीदा	१९७४	पराग प्रकाशन, दिल्ली	१९७८
१४. अरे ! मायावी सरोबर	१९७४	पराग प्रकाशन, दिल्ली	१९८१
१५. रक्खीज	१९७६	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	१९८२
१६. पोस्टर	१९७७	पराग प्रकाशन, दिल्ली	१९८३
१७. राक्षस	१९७७	पांडुलिपि	
१८. चेहरे	१९७८	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	१९८३
१९. कोमल गांधार	१९७९	पराग प्रकाशन, दिल्ली	१९८३
२०. आधी रात के बाद	१९८१	आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली	१९८३
२१. त्रिकोण का चौथा कोण		अप्रकाशित - अनुपलब्ध	

**परिशिष्ट : तीन**  
**नाटकों को प्राप्त विविध पुरस्कार**

- |                    |   |
|--------------------|---|
| १. मूर्तिकार       | श्रीनगर की नाटक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित  |
| २. बिन बाटी के दीप | ८ जनवरी, १९८८ को महाराष्ट्र राज्य नाट्य प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार  |
| ३. बाट का यानी     | मध्य प्रदेश सरकार का ५ हजार पुरस्कार नाट्य लेभन प्रतियोगिता में   |
| ४. बंधन अपने अपने  | मध्य प्रदेश सरकार का ११ सौ रुपिये का प्रथम पुरस्कार नाट्य लेभन प्रतियोगिता में  |
| ५. एक और झोणाचार्य | कलकत्ता की अनामिका नाट्य संस्थाने १९७५ की श्रेष्ठ नाटयकृति घोषीत किया   |
| ६. पौस्टर          | सुबर्ण महोत्सवी प्रयोग में नया किरणमान स्थापित किया। ८ जनवरी, १९८८ में महाराष्ट्र राज्य नाट्य समर्धा में तीन हजार का प्रथम पुरस्कार |
| ७. घरोंदा          | फिल्म का आशीर्वाद का पुरस्कार   |
| ८. द्वारियाँ       | फिल्म का सर्वश्रेष्ठ 'फिल्मफेअर' पुरस्कार और 'आशीर्वाद' पुरस्कार  |
| ९. कोमल गांधार     | साहित्य कला परिषद, दिल्ली द्वारा 'कोमल गांधार' पुरस्कृत   |

**परिशिष्ट : चार  
एक और दोषाचार्य का मंचन**

१. एक और दोषाचार्य प्रथम मंचन : भोपाल में १९७५, बबई दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत हुआ।
२. गोरखपुर, 'रूपांतर' नाट्यमंच द्वारा प्रस्तुत हुआ।
३. दिल्ली की नाट्यमंच संस्था 'नागरिक' द्वारा, सन् १९८० में प्रस्तुत हुआ।
४. वैहारदून, 'जागृति' संस्था द्वारा, सन् १९८० में प्रस्तुत हुआ।
५. गाजियाबाद, 'गाजियाबाद' नाट्य संस्था द्वारा, सन् १९८५ में प्रस्तुत हुआ।
६. हंदौर, 'कलानिकेतन' नाट्य संस्था द्वारा, सन् १९८५ में प्रस्तुत हुआ।
७. बबई, 'भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा)' द्वारा, सन् १९९३ में प्रस्तुत हुआ।

## ‘एक और द्वेषाचार्य’ प्रस्तुत नाटक का हृष्य



अंजना श्रीवास्तव, सुलभा आर्य

‘इष्टा’ने सादर केलेला ‘एक और द्वेषाचार्य’चा प्रयोग अधिक सफाईदर होता. आजच्या भ्रष्टाचारी, शिक्षण, व्यवस्थेवरचे हे नाटक एक विदारक भाष्य करते. आदर्श मूल्याचे संवर्धन व जपणुक हाच ज्या शिक्षण व्यवस्थेचा उद्देश तीच व्यवस्था भ्रष्टाचाराने कशी पोखरलेली झाड़ी आणि एका आदर्शवादी प्राध्याद्याचाच ती कसा बळी घेते, याचे वित्रय द्वेष नाटकात डॉ. शेष यांनी अत्यंत न्यारद्यापणे केले आहे. सत्ताधाचांच्या पाशांत, अडकलेला महाभारतातला द्वेषाचार्य एका तेजस्वी गुणवत्तेचा समृद्ध नाश करायलाच क्रारणीभूत होतो आणि त्यातून सरे सुखच हरवून बसतो. असा अमज्ज्यांया युगातला द्वेषाचार्य नाटक काराने या नाटकात उभा केला आहे. सुमारे दोन दशकापूर्वी लिहिलेल्या या नाटकात, महाभारतातील व्यक्तिरेखांचा आणि कथेचा प्रसंगव्याप्ति साहाय्याने जुळवलेला संबंध आजप्रितीला ढोबळ, आणि सकेतिक वाढळा, तरी नाटकातल्या घटना आजही धगधर्जीन बास्तवाचाच

आदर्शवादी प्राध्यापक अरविंदची दोलायमान अवस्था आणि परिस्थिती-शरणता अंजना श्रीवास्तव यांनी कमालीची टोकदार केली. विनोदी अभिनेता म्हणून ख्याती भिळवलेला हा कलावंत गंभीर भूमिकाही तितक्याच समर्थपणे आविष्कारित करू शकतो, हे पाहून त्याच्या अभिनय सामर्थ्याची ओळख पटली. सुलभा आर्यने प्राध्यापकाच्या पलीचा मध्यमवर्गीय सांसारिक दृष्टिकोन यथार्थपणे प्रकट केला. मुस्ताकखानने उभा केलेल्या द्वेषाचार्याने विकल्प्या जाणाऱ्या विद्वत्तेचे गहिरे रूप प्रकट केले. अन्य कलावंतांनीही योग्य साथ दिली.

